स्वच्छता ही सेवा

संकलनकर्ता
आदर्श तिवारी

Dr. Syama Prasad Mookerjee
Research Foundation

डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी शोध अधिष्ठान

"महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी। महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर मां भारती को आजाद कराया। अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।'

'मैं शपथ लेता हूं कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूंगा और उसके लिए समय दूंगा। हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह दो घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूंगा। मैं न गंदगी करूंगा और न किसी को करने दूंगा। सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से मेरे मोहल्ले से, मेरे गांव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूंगा। मैं यह जानता हूं कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं, उसका कारण यह है कि वहां के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं। इस विचार के साथ मैं गांव-गांव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूंगा। मैं आज जो शपथ ले रहा हूं वह अन्य 100 व्यक्तियों से भी करवाउंगा। वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए 100 घंटे दें, इसके लिए प्रयास करूंगा। मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा।'

भारत माता की जय!"

श्री नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

"स्वच्छता के संस्कार को हमें विकसित करना है। जब तक यह विकसित ना हो तब तक इस अभियान को निरंतर चलाना है। प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने स्वच्छता की ओर ध्यान दिया और इसे एक जन आंदोलन बनाया है। आजादी के बाद से इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया था। इस आंदोलन एवं अभियान की वजह से अब हजारों गांव, शहर, कस्बे खुले में शौच से मुक्त हो रहे हैं। पूरे देश में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है इसमें शपथ का ही महत्व है इस शपथ का निर्वहन हमें करना चाहिए। ताकि मोदी जी की अपील पर स्वच्छ भारत अभियान में हम सब अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें।"

श्री अमित शाह
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

स्वच्छता ही सेवा

संकलनकर्ता

आदर्श तिवारी

रिसर्च ऐसोशियेट, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

कला

प्रवीण अभिषेक

Dr. Syama Prasad Mookerjee
Research Foundation

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

www.spmrf.org

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	लेख	पेज
1	स्वच्छ भारत अभियान के ब्रांड एम्बेसडर, प्रख्यात गायक कैलाश खेर से आदर्श तिवारी की बातचीत - आदर्श तिवारी	6
2	'शौचालय क्रांति' लाने में कामयाब रही मोदी सरकार - रमेश कुमार दुबे	8
3	गाँधी के स्वच्छ भारत के सपने को कांग्रेस ने अनदेखा किया, मोदी सरकार कर रही पूरा - सतीश सिंह	9
4	स्वच्छता एक संकल्प - अजय धवले	11
5	स्वच्छता और महात्मा गांधी - सन्नी कुमार	12
6	जानिए, स्वच्छ भारत अभियान से कैसे बदल रही देश की तस्वीर! - नवोदित सक्तावत	14
7	यह योजना नहीं संकल्प है - गौरव दफ्तरी	16
8	स्वच्छ भारत का साकार होता सपना - राजीव प्रताप सिंह	18
9	स्वच्छता की दिशा में भगीरथ प्रयास - महेश तिवारी	20
10	स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने... - कनिष्का तिवारी	23
11	स्वच्छ होगा भारत तभी स्वस्थ होगा भारत - आशु दास	24
12	लोगों में स्वच्छता की 'आदत' विकसित करना है मोदी सरकार का मुख्य लक्ष्य - अनुराग सिंह	25

भूमिका

केंद्र की सत्ता में आने के बाद 2 अक्टूबर, 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ किया। इसका उद्देश्य न केवल सरकार के स्तर पर देश से गन्दगी समाप्त करने के लिए प्रयत्न करना था, बल्कि स्वच्छता के प्रति आम जनमानस की सोच में परिवर्तन लाना भी था। प्रधानमंत्री के आह्वान पर सिनेमा, उद्योग, राजनीति, खेल आदि विभिन्न क्षेत्रों की तमाम बड़ी हस्तियाँ भी इस अभियान का हिस्सा बनीं। इधर सरकार देश में तेजी के साथ शौचालय निर्माण के निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में बढ़ रही है, जिसके परिणामस्वरूप यह उम्मीद की जा रही कि देश शीघ्र ही खुले में शौच की समस्या से मुक्त हो जाएगा। आम लोगों में भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता का विकास हो रहा है। कुल मिलाकर, आज तीन वर्ष पश्चात यह अभियान एक विराट आन्दोलन का रूप ले चुका है।

स्वच्छता के इस आन्दोलन को लेकर इन दिनों देश में काफी चर्चा है। इस चर्चा के क्रम में ही इन दिनों ऑनलाइन वैचारिक पोर्टल नेशनलिस्ट ऑनलाइन डॉट कॉम पर भी बहुत से युवा व वरिष्ठ लेखकों के लेख प्रकाशित हुए, जिन्हें एक स्थान पर संकलित कर एक ई-बुकलेट का रूप देने की पहल डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी शोध अधिष्ठान द्वारा की जा रही है। इस संकलन में सम्मिलित सभी लेखों के लेखकों के प्रति अधिष्ठान आभार व्यक्त करता है।

डॉ. अनिर्बान गांगुली

निदेशक, डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी शोध अधिष्ठान

स्वच्छ भारत अभियान के ब्रांड एम्बेसडर, प्रख्यात गायक कैलाश खेर से आदर्श तिवारी की बातचीत

स्वच्छ भारत अभियान के हाल ही में तीन वर्ष पूरे हुए हैं। आप इस अभियान के ब्रांड एम्बेसडर भी हैं। इन तीन सालों में स्वच्छता को लेकर आप किस तरह का परिवर्तन देख रहे हैं?

2 अक्टूबर, 2015 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने मुझे अपने नवरत्नों में शामिल किया जिसका निमित्त बना स्वच्छ भारत आंदोलन। स्वच्छ भारत को मैं एक निमित्त मात्र मानता हूं, लेकिन इसके जरिये जैसी पौराणिकता, विशेषता, संस्कृति और विविधता के बारे में हम पढ़ते आए हैं, वैसा भारत बनाने की बात थी। दिशा बदली, दशा बदली, नेतृत्व बदला और हमें नेतृत्व मिला ऐसे प्रधानमंत्री का जिन्होंने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की जो राजनीति से ऊपर है, धर्म से परे है। उन्होंने स्वस्थ भारत की परिकल्पना की और यह तभी संभव है जब हम स्वच्छ होंगे। स्वस्थ भारत तब होगा जब भारत स्वच्छ होगा। स्वच्छता को जनांदोलन के प्रारूप में प्रधानमंत्री जी ने बदला, यह आंदोलन तब शुरू हुआ जब पिछली सरकारों ने देश को काफ़ी उतार–चढ़ाव वाला बना दिया है। ऐसे में उनके सामने काफ़ी चुनौतियाँ हैं।उनके सामने लक्ष्य है जिसको भेदना है।हर क्षेत्र को संतुलित करना है। हमने सुना था अकबर के नवरत्न थे, लेकिन उसके बाद पहली बार सुना अलग–अलग क्षेत्र से प्रधानमंत्री ने विविधता से जुड़े हुए लोगों को स्वच्छ भारत से जोड़ा खास कर उन लोगों को जिनको लोग फॉलो करते हैं। आँखें पहले भी थीं, हाथ पहले भी थे, लेकिन यह दृष्टि पहले नहीं थी। पहले यह बात किसी ने सोची भी नहीं थी। भारत में बहुत गणनायक और जननायक हुए हैं; लेकिन उनका सदुपयोग बहुत कम हुआ है। परन्तु, अब परिपाटी बदल रही है। आज स्वच्छता को लेकर मनुष्य की चेतना बदल रही है। अभूतपूर्व परिवर्तन कानून और गाइडलाइंस बनाने से नहीं आता। जरूरी है कि नीयत बदले क्योंकि नीयत बदलेगी तो नियति बदलेगी। धीरे धीरे स्वच्छता जनचेतना व जनांदोलन का रूप ले रही है। इससे मन बदलने लगे हैं। जो लोग ज्यादा गंदगी फैला रहे थे, वह कम फ़ैला रहे हैं। शहरों में मानसिकता तेजी से बदल रही है, गांवों में स्थिति पहले से ही ठीक है। गाँव के लोग आज भी अपने कपड़े आदि के थैलों का ही इस्तेमाल करते हैं, पॉलिथीन का इस्तेमाल कम करते हैं।अब शहरों में भी पॉलिथीन को लेकर बदलाव आ रहा है। अभी तो 3 साल हुए हैं, लेकिन इसका बहुत सकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ा है और

आगे परिणाम भी सकारात्मक होंगे।

आप कई मंचो से लगातार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ़ करते आये हैं, जिसके चलते आपको आलोचना भी झेलनी पड़ती है। आप अपने आलोचकों को क्या जवाब देना चाहेंगे?

देखिए, मैं किसी पार्टिकुलर इंसान को संदेश देना नहीं चाहता। जब भी कुछ असामान्य होता है, तो कुछ आवाज़ें जरूर उठती हैं। चाहे वह मनुष्य के लिए हो या प्रकृति के लिए। सिर्फ एक बात पर आवाज कभी उठती नहीं मनुष्य जो भी करता है, जो भी सोचता है, तो आवाज़े उठती हैं। कुछ सकारात्मक होती हैं तो कुछ नकारात्मक। अचानक भूकंप आता है, तब आवाजें नहीं उठतीं। क्यों? क्योंकि उस प्रकृति के आगे किसी की नहीं चलती, तब कोई किसी पर दोषारोपण नहीं करता। अलग–अलग मस्तिष्क है। किसी को ठंड अच्छी लगती है, किसी को बुरी लगती है। इस संसार में भांति-भांति के लोग हैं। ऐसे में, अपनी प्रतिक्रिया देना तुच्छ बात होती है। केवल परमात्मा के सामने जबान नहीं चलती, वरना जबतक जबान है, चलती रहेगी।

'स्वच्छ भारत अभियान' के लिए अबतक आपने क्या–क्या योगदान दिया है? आपने स्वच्छता को लेकर जो गाना गाया है, वह काफ़ी चर्चित रहा। क्या आपने कभी वह गाना नगरपालिका की गाड़ी पर बजते हुए सुना है?

हमने तो स्वयं नहीं सुना, पर अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर से किसी ने एक क्लिप भेजी है, जिसमें नगरपालिका की गाड़ी में हमारा गाना बज रहा था। मैं इसके माध्यम से एक संदेश देता हूँ। जिस बात को आप डायलाग कहकर यानी संवाद के जरिये प्रभावी रूप से नहीं कह सकते हो, लेकिन गाकर हर प्रकार के हृदय को प्रभावित आप कर पाते हैं। गाने के द्वारा लोगो को संदेश पहुंचाया जाता है, तो उसका बहुत प्रभाव होता है मनुष्य पर। गाना तो बहुत लोग पहले भी गवाते आए हैं, पर इस तरह के अप्रोच के साथ कि सरकार इस तरह का आयोजन बनाये और एक गाने का प्रारूप बनाये तो, उससे क्या होता है गाने का प्रभाव धमनियों पर ऐसा होता जैसे हवाओं की।अच्छी संगीत का असर हमारी धमनियों में हो रहा है। यह बहुत नयापन था कि किसी सरकार ने इस तरह का प्रारूप दिया। सिर्फ गाने तक नहीं, बल्कि कई इवेंट में हम गए हैं। रत्नागिरी में एक केन्द्रीय मंत्री लेकर गये थे। बहुत सारे स्कूलों में गए हैं, बनारस में अस्सी घाट गए। इस तरीके से स्कूल के बच्चों को जोड़ा और 5-5 हजार स्टूडेंट के साथ हमने स्वच्छता का संदेश दिया।

आपके जीवन में संघर्षों के कई उतार–चढ़ाव आए हैं। आज आप काफी लोकप्रिय हैं। कभी राजनीति में जाने के बारे में सोचा है?

नहीं, हम अगर राजनीति में आयेंगे तो उससे क्या होगा, कटुता बढ़ेगी। पहले भी कटुता बहुत लोगो में आ जाती है जब आप चमकते हैं, क्योंकि मनुष्य का जो मस्तिष्क हैं उसके जो शेल हैं, दो प्रकार के होते हैं - एक सकारात्मक एक नकारात्मक। यह दोनों मिलकर ही शक्तिवर्धन करते हैं। परंतु, दुर्भाग्य से राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें नकारात्मकता और सकारात्मकता से बहुत ज्यादा जूझना पड़ता हैं। उसमें जूझते–जूझते आप जिस मूल क्षेत्र से हैं, उसपर प्रभाव पड़ेगा। हम अभी नदी की तरह अविरल अनवरत एक नैसर्गिक प्रवाह में हैं। कितने लोग हमें सजेस्ट करते हैं, हम भी सुनते हैं उनकी बात। पर, ।उधौ मन न भयो दस –बीस, एक ही थो जो गयो श्याम संग को अधरावे ईश...।

केंद्र सरकार के कामकाज को कैसे देखते हैं ? अगर सरकार की दो प्रमुख उपलब्धियों के बारे में पूछा जाए तो आप किसे बतायेंगे?

स्वच्छता आंदोलन और योग, इन्होने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की गरिमा को बढ़ाया है। सारा विश्व मान रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय योग भारत की देन है। यह अपने आप में दो शुभ कार्य राजनीति से ऊपर उठकर भारत सरकार ने किये हैं।इसके साथ यह भी है कि सभी सरकारों के काम करने का अपना नियोजन होता है। हाँ ,अगर बहुत ज्यादा लोग व्याकुल हैं तो घर के मुखिया को मालूम चल ही जाता है कि लोग व्याकुल है।

स्वच्छता को लेकर लोगों को क्या संदेश देना चाहते हैं?

यही संदेश देना चाहते हैं कि यह देश आपका है, यह मुहल्ला आपका है, स्वास्थ्य आपका है। यदि आप इसका ध्यान रखेंगे तो किसी और का नहीं, आप ही का भला होगा। यदि बीमारी फैलती है और फिर महामारी बन जाती है, तो इससे सिर्फ ऐसा नही कि पड़ोसी ही परेशान होगा, हम भी परेशान होंगे। यदि एक मच्छर गंदगी से बनेगा; यदि एक को भी टीवी होगी, तो जाने कितने बालकों को पकड़ लेगी। इसलिए हम सब को सचेत होना पड़ेगा। चेत रे नर चेत रे, तेरा चिड़िया चुग गई खेत रे ....अरे नर चेत रे! ❑

‘शौचालय क्रांति’ लाने में कामयाब रही मोदी सरकार

रमेश कुमार दुबे

भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद में आकंठ डूबी और जाति-धर्म की राजनीति करने वाली कांग्रेसी सरकारों ने साफ-सफाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, बेकारी जैसी जमीनी समस्याओं की ओर बहुत कम ध्यान दिया। दूसरे शब्दों में कांग्रेसी सरकारें सत्ता की राजनीति से आगे नहीं बढ़ पाईं। इसका नतीजा यह हुआ कि अपने नागरिकों को स्वच्छता की सुविधाएं मुहैया कराने में भारत पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका से ही नहीं युद्ध ग्रस्त देश अफगानिस्तान से भी पीछे रहा।

स्वच्छता के मानकों पर पिछड़ने के कारण भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कई बार शर्मिंदगी झेलनी पड़ी। 2010 में प्रकाशित यूनिसेफ की “प्रोग्रेस ऑन सेनिटेशन एंड ड्रिंकिंग वाटर” नामक रिपोर्ट के अनुसार आधुनिकता और विकास के तमाम दावों तथा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में दुनिया भर में अपना लोहा मनवाने वाला भारत ऐसे देशों का सरगना है जहां लोग खुले में शौच जाते हैं। उल्लेखनीय है कि 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू होने तक ग्रामीण भारत में 66 फीसदी लोगों के पास शौचालय की सुविधा नहीं थी, वहीं शहरों में यह अनुपात 19 फीसदी था।

बीमारी-गरीबी की जड़

देखा जाए तो शौचालय की सुविधा होने से न केवल गरिमा और सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक होता है। फिर इससे पेयजल को सुरक्षित बनाने में भी मदद मिलती है। गौरतलब है कि साफ-सफाई की बुनियादी सुविधा उपलब्ध न होने के कारण लाखों लोग उन बीमारियों के शिकार हो जाते हैं जिन्हें रोका जा सकता है। एक अनुमान के मुताबिक खुले में शौच से होने वाली बीमारियों से भारत को हर साल बारह अरब रूपए और बीस करोड़ श्रम दिवसों से हाथ धोना पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के मुताबिक दुनिया के जिन क्षेत्रों में खुले में शौच की प्रथा प्रचलित है, उन्हीं क्षेत्रों में बाल मृत्यु दर अधिक है। हैजे का मूल कारण दूषित पानी और स्वच्छता की कमी है। इसे भारत और चीन की तुलना से समझा जा सकता है। भारत से अधिक आबादी वाले चीन में खुले में मल विसर्जन करने वालों की संख्या महज पांच करोड़ और डायरिया से मरने वाले बच्चों की संख्या मात्र चालीस हजार है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने निष्कर्ष में बताया है कि साफ-सफाई व्यवस्था के सुधार पर खर्च किए गए प्रत्येक डालर से औसतन सात डालर का आर्थिक लाभ होता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाया बदलाव

यूपीए सरकार ने 2012 तक सभी को स्वच्छ पानी और शौचालय सुविधा मुहैया कराने के लिए संपूर्ण स्वच्छता अभियान चलाया, लेकिन राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के चलते इस अभियान ने दम तोड़ दिया। प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने देश को खुले में शौच से मुक्त करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए इसके लिए समयबद्ध कार्यक्रम तय किया।महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ अर्थात 2 अक्टूबर 2019 तक भारत को खुले में शौच के अभिशाप से मुक्त करने हेतु प्रधानमंत्री ने 2 अक्टूबर 2014 को ‘स्वच्छ भारत अभियान’ शुरू किया। प्रधानमंत्री इस जमीनी सच्चाई को जानते थे कि यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य महज सरकारी कार्यक्रमों के जरिए पूरा नहीं होगा। इसलिए उन्होंने स्वच्छता को जनांदोलन बनाया। सोशल से लेकर प्रिंट मीडिया, टेलीविजन से लेकर फिल्मों के जरिए स्वच्छता के बारे में जागरूकता फैलाई गई। योजना के लिए वित्तीय आवंटन बढ़ाने के साथ-साथ पंचायतों, धार्मिक और गैर-सरकारी संगठनों को भागीदार बनाया गया। देश की जनता ने प्रधानमंत्री की शौचालय क्रांति को भरपूर समर्थन दिया। यही कारण है कि इसके नतीजे बेहद उत्साहजनक रहे। अब तक देश के 2.30 लाख गांव खुले में शौच से मुक्त हो चुके हैं। यदि जिला स्तर पर देखें तो 160 जिले इस लक्ष्य को हासिल कर चुके हैं। राष्ट्रीय स्तर पर जहां 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छता कवरेज 38.7 फीसदी था, वहीं 29 अगस्त 2017 को यह अनुपात बढ़कर 67.30 फीसदी तक पहुंच गया। जिस रफ्तार से देश में शौचालयों का निर्माण हो रहा है, उसे देखते यह उम्मीद है कि 2 अक्टूबर 2019 तक देश खुले में शौच के अभिशाप से मुक्त हो जाएगा। इससे स्पष्ट है कि मोदी सरकार देश में शौचालय क्रांति लाने में सफल रही।❑

(लेखक केन्द्रीय सचिवालय में अधिकारी हैं। ये उनके निजी विचार हैं।)

गाँधी के स्वच्छ भारत के सपने को कांग्रेस ने अनदेखा किया, मोदी सरकार कर रही पूरा

सतीश सिंह

महात्मा गाँधी ने एक “स्वच्छ भारत” का सपना देखा था। वह चाहते थे कि भारत एक स्वच्छ देश के रूप में जाना जाये, लेकिन आजादी के सात दशक बाद भी अभी भारत को स्वच्छ नहीं बनाया जा सका है। चूंकि, पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकारें स्वच्छता के महत्व को समझी ही नहीं।

महात्मा गांधी के इस अधूरे सपने को पूरा करने के लिये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को देश के सभी लोगों से इस अभियान से जुडने की अपील की, जिसके तहत देश को स्वच्छ रखने और खुले में शौच करने की प्रथा से निजात पाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रधानमंत्री द्वारा 2 अक्टूबर, 2019 तक भारत को एक स्वच्छ देश में बदल देने का संकल्प व्यक्त किया गया। गौरतलब है कि इस दिन महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती मनाई जायेगी। जल्द से जल्द इस सपने को साकार करने के लिये प्रधानमंत्री ने सभी से एक साल में कम से कम 100 घंटे श्रमदान करने की अपील की है। मृदला सिन्हा, सचिन तेंदुलकर, बाबा रामदेव, अनिल अंबानी, प्रियंका चोपड़ा आदि नामचीन लोग भी इस अभियान से जुड़े हैं, जिससे देशभर में इस सरोकार के प्रति सकारात्मक माहौल बना है।

इक्कीसवीं शताब्दी में जब देश विश्व पटल पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। तब देश के कई भागों में हमारी माँ, बहन और बेटी को शौच के लिये रात का इंतजार करना पड़ता है। इससे बड़ी शारीरिक यातना उनके लिये क्या हो सकती है। स्कूलों में भी आज लड़कियों के लिये अलग से शौचालय की व्यवस्था नहीं है, जिसके कारण एक बड़ी संख्या में वे बीच में ही स्कूल छोड़ने के लिये मजबूर हैं। देश के कई इलाकों में आज भी मैला ढोने का चलन है। स्थिति में बदलाव के लिये हर घर में शौचालय का होना जरूरी है, लेकिन भारत जैसे बड़े एवं विविधतापूर्ण देश में इस समय भी हर घर में शौचालय नहीं है और इसे बनाने की राह में भी अनेक अड़चने हैं। इन दिक्कतों को दूर करना भी प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान का लक्ष्य है और वे इस दिशा में निरंतर रूप से प्रयास कर रहे हैं।

स्वच्छ भारत अभियान का मकसद शहर एवं गाँव में व्याप्त गंदगी का समूल नाश करना है। इस क्रम में सामुदायिक शौचालयों एवं घरों में शौचालय के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच करने की प्रवृति पर रोक लगाने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि खुले में शौच करने की मजबूरी को खत्म किया जा सके। ग्रामीण क्षेत्र में शौचालय की समस्या सबसे ज्यादा गंभीर है। स्वच्छ ग्रामीण क्षेत्र में ही बेहतर ग्रामीण जीवन की कल्पना की जा सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में 2 अक्टूबर 2019 तक 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण का लक्ष्य है, जिसपर एक लाख चौंतीस हज़ार

करोड़ रूपये की लागत आयेगी। तकनीक की मदद से ग्रामीण क्षेत्र में अपशिष्ट प्रबंधन के साथ-साथ जैव उर्वरक और ऊर्जा के विभिन्न रूपों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। मोदी सरकार चाहती है कि इस अभियान को सफल बनाने के लिये ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे, युवा, बूढ़े खास करके शिक्षक बढ़-चढ़ कर हिस्सा लें, जिसमें पंचायत, पंचायत समिति एवं जिला परिषद की सहभागिता को भी सुनिश्चित किया जाये।

प्रत्येक पारिवारिक इकाई के लिये शौचालय की लागत की सहायता राशि को 10,000 से बढ़ाकर 12,000 रुपये किया गया है। शौचालय निर्माण के लिए सरकार द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता में केंद्र सरकार का योगदान 9,000 रुपये और राज्य सरकार का योगदान 3,000 रुपये होगा। वहीं जम्मू एवं कश्मीर, उत्तरपूर्व राज्यों एवं विशेष दर्जा प्राप्त राज्यों को केंद्र सरकार द्वारा 10,800 रूपये और राज्य सरकार द्वारा 1,200 रुपये दिया जायेगा। इस आलोक में शौचालय निर्माण की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिये दूसरे स्रोतों से प्राप्त होने वाली सहायता पर किसी प्रकार की बंदिश नहीं है। 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। जिन आवासीय क्षेत्रों में व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण करना संभव नहीं है, वहाँ सामुदायिक शौचालयों का निर्माण किया जायेगा। इस क्रम में पर्यटन स्थल, बाजार, बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों पर सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया जायेगा।

आंकड़ों के अनुसार 4401 शहरों में इस योजना को लागू कराया जायेगा, जिसके अंतर्गत केंद्र सरकार द्वारा 14,623 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे, जिसमें से 7,366 करोड़ रुपये ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर 4,165 करोड़ रुपये व्यक्तिगत घरेलू शौचालय के निर्माण पर 1,828 करोड़ रुपये जन-जागरूकता अभियान पर एवं 655 करोड़ रुपये समुदाय शौचालय बनाने पर खर्च किये जायेंगे। इसके बरक्स अस्वच्छ शौचालयों का पुनर्निर्माण, मैला ढ़ोने की प्रथा का उन्मूलन, अपशिष्ट प्रबंधन एवं स्वच्छ रहने के लिये जन-जागरूकता अभियान भी चलाया जायेगा।

स्वच्छ भारत अभियान की बदौलत भारत को स्वच्छ बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किये गये हैं। इस अभियान को शुरू करने के समय देश में स्वच्छता कवरेज 39 प्रतिशत थी, जो अब बढ़कर 67.5 प्रतिशत हो गई है। 2.38 लाख गाँव "खुले में शौच से मुक्ति" की श्रेणी में आ गये हैं। आंकड़ों के अनुसार शहरी इलाकों में 29,79,945 घरेलू शौचालयों का निर्माण किया गया है। 44,650 वॉर्डों में आज शत-प्रतिशत कचरा इकठ्ठा किया जा रहा है। शहरों में 2,19,169 सामुदायिक एवं सार्वजनिक शौचालयों का भी निर्माण किया गया है, जो लक्ष्य के अनुरूप प्रगति है। अपशिष्ट से विद्युत निर्माण की क्षमता बढ़कर 94.2 मेगावाट हो गई है। 1286 ऐसे शहर हैं जहाँ कोई भी खुले में शौच नहीं करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में 2 अक्तूबर, 2014 से अब तक 4,80,80,707 शौचालयों का निर्माण किया गया है। 196 ऐसे जिले हैं जहाँ कोई खुले में शौच नहीं करता है। नीति आयोग के मुताबिक वर्ष 2019 तक कोई खुले में शौच नहीं करे इसके लिये 5.5 करोड़ घरेलू शौचालय एवं 1,15,000 सामुदायिक शौचालयों का निर्माण कराने की जरूरत है। आज सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, केरल, हरियाणा, उत्तराखंड आदि ऐसे राज्य हैं जहाँ कोई भी खुले में शौच नहीं करता है। एक अनुमान के मुताबिक वर्ष 2018 तक दस और राज्य इस श्रेणी में आ जायेंगे। स्वच्छता अभियान हो या शौचालय बनाने की बात हो इसके लिये सिर्फ सरकार की तरफ देखना ठीक नहीं, ये हमारा और आपका भी कर्तव्य है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण आवश्यक है, क्योंकि अस्वच्छता से भारत की छवि खराब हो रही है। स्वच्छ भारत अभियान पोर्टल के माध्यम से लोगों को इस अभियान से जुडने के लिये एक मंच प्रदान किया गया है, जिससे जुड़कर लोग इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं। अधिक-से-अधिक लोगों के इस अभियान से जुड़ने से यह एक जन-आंदोलन का रूप ले रहा है। कहा जा सकता है कि देशभर में स्वच्छता के प्रति सकारात्मक माहौल बन रहा है। "टायलेट एक प्रेम कथा" फिल्म इसकी ताजा बानगी है। जब समाज में व्याप्त समस्या पर सिनेमा बनने लगे तो समझिए कि समस्या के समाधान के लिये समाज में संवेदनशीलता बढ़ रही है। सरकार के इस मुद्दे पर गंभीर रहने से लक्ष्य को हासिल करना और भी आसान हो गया है।

कुल मिलाकर सरकार के इन प्रयासों को देखते हुए कहा जा सकता है कि गांधी को स्वच्छ भारत के स्वप्न, जिसे उनपर अधिकार जताने वाली कांग्रेस ने अनदेखा किया, को मोदी सरकार पूरा करने की दिशा में पूरी इच्छाशक्ति के साथ बढ़ रही है। उम्मीद है कि सरकार के ये प्रयास जल्द ही रंग लाएंगे और हम एक स्वच्छ भारत बनाने में कामयाब होंगे। ❑

(लेखक भारतीय स्टेट बैंक के कॉरपोरेट केंद्र,मुंबई के आर्थिक अनुसंधान विभाग में मुख्य प्रबंधक हैं।ये उनके निजी विचार हैं।)

स्वच्छता एक संकल्प

अजय धवले

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान को तीन साल पूरे हो गए हैं। स्वच्छता का यह अभियान इन 70 सालों में भारत सरकार का देश में सफाई और उसे खुले में शौच से मुक्त करने का कोई पहला कदम हो ऐसा नहीं है !पूर्ववर्ती सरकारे गांवों में स्वच्छता के लिए कोई न कोई कार्यक्रम चलाती रही है। इस दिशा में ठोस कदम 1999 में सरकार ने उठाया था एवं समग्र स्वच्छता के उद्देश्य से 'निर्मल भारत अभियान' की शुरुआत की गई, जिसका नाम 'संपूर्ण स्वच्छता अभियान' रखा गया था। किन्तु आजादी के इतने वर्षो बाद भी हमारे देश में स्वछता को लेकर लोग जागरूक नहीं है। 2014 में आई सयुंक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में कहा गया, जिसमे विस्तृत रूप से लेख था कि भारत की करीब 60 फीसदी आबादी खुले में शौच करती है और इसी रिपोर्ट के आधार पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की एवं इसे अपनी सरकार की प्राथमिकता माना।

आज हमें सुराज की स्थापना के लिये स्वच्छाग्रही देशवासियों के जनभागीदारी के महत्व को रेखांकित करने की जरुरत है। हाल ही में स्वच्छ भारत अभियान के तीन साल पूरे होने पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि एक हजार गांधीजी आ जाएं, एक लाख मोदी आ जाएं, सभी मुख्यमंत्री और सरकारें लग जाएं लेकिन स्वच्छता का सपना तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक सवा सौ करोड़ देशवासी इसे जनभागीदारी के साथ आगे नहीं बढ़ाएंगे। स्वच्छता अभियान के तीन वर्ष में हम आगे बढ़े हैं क्योंकि जब इस कार्यक्रम को तीन वर्ष पहले शुरू किया गया था, तब मीडिया, राजनीतिक दलों समेत कई वर्गों द्वारा इस अभियान की आलोचना की गयी थी। अधिकतर समाज के हितधारक प्रधानमंत्री जी को उनकी 2 अक्टूबर की छुटटी खराब करने के लिए दोषी मानते थे किन्तु आज वे सब इसे महत्व दे रहे है।

वास्तव में स्वच्छता सभी चाहते हैं लेकिन सफाई कोई नहीं करना चाहता, जब तक देश के लोग सफाई का संकल्प नहीं लेंगे स्वच्छता नहीं होगी अगर समाज अपनी शक्ति को स्वीकार करके चले, जन भागीदारी को स्वीकार करके चले तो ये अभियान सफल होता जायेगा।

गौरतलब है की भारत से ही विश्व के सभी देशों ने सभ्यता सीखी किन्तु आज हम सब विदेशों में साफ-सफाई की मिसाल देते हैं और स्वयं हम अभी पीछे हैं। प्रधानमंत्री ने स्वच्छता को एक मिशन बनाया है और हर किसी को इससे जुड़ते हुए इसे अपना कर्तव्य बनाना होगा, तभी स्वच्छता अभियान सार्थक साबित हो पायेगा।

गांधी जी ने 1916 में पहली बार अपने भाषण में भारत में स्वच्छता का विषय उठाया था और 2014 में प्रधानमंत्री जी ने इस मुद्दे को उठाया। स्वच्छता 21वीं सदी के आजाद भारत में एक 'मुद्दा' है, यह हम सब भारतवासियों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन 2019 में भी अगर यह एक मुद्दा रहा, तो अधिक दुर्भाग्यपूर्ण होगा। वास्तव में यह व्यवहार परिवर्तन का विषय है और हर नागरिक को स्वच्छता हेतु अपने व्यवहार में परिवर्तन करना होगा।

वास्तव में कोई भी सरकार या नेता अकेले ऐसे किसी महाअभियान को सफल नहीं बना सकते। इसके लिए व्यापक जन भागीदारी चाहिए। महात्मा गांधी भी आजादी हासिल करने में इसलिए सफल हो पाए क्योंकि लाखों लोगों ने उस आंदोलन में हिस्सा लिया। कोई भी बड़ा अभियान या लक्ष्य तब तक कठिन है, जब तक कि वह जन अभियान नहीं बनता।

प्रधानमंत्री जी की इस अभियान हेतु संकल्पता देखकर समाज के अधिकतर हितधारकों ने इसे गंभीरता से लिया है और अपने अपने स्तर पर इसमें सहयोग कर रहे है। अब वह दिन दूर नहीं जब हर भारतीय यह कह सके की स्वच्छता उसके जीवनशैली का मूलभूत अंग है और इसके लिए वह व्यक्तिगत रूप से समर्पित है। ❑

(लेखक पेशे से कॉर्पोरेट लॉयर हैं।)

स्वच्छता और महात्मा गांधी

सन्नी कुमार

राजनीतिक आदर्श के रूप में यह सूत्रवाक्य अक्सर दुहराया जाता है गांधीजी के सपनों का भारत बनाना। वैसे यह निर्मिती अपने आप में अप्रश्नेय और निर्विवाद तो नहीं है लेकिन भारतीय राजनीतिक जीवन में कमोबेश एक स्वीकार्य धारणा है। उल्लेखनीय है कि गांधीजी सिर्फ देश की आजादी के आंदोलन में ही भाग नहीं ले रहे थे बल्कि वो व्यापक संदर्भ में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को भी निर्देशित कर रहे थे। वैसे तो सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों में 'गांधीजी के सपनों का भारत' एक अनंत विस्तार लिये हुए है लेकिन उससे अगर एक तत्व लें तो 'स्वच्छता' के बिना गांधी के सपनों का भारत नहीं बन सकता। इसी पृष्ठभूमि में वर्तमान सरकार ने 2अक्टूबर(गांधीजी का जन्मदिन) 2014 को 'स्वच्छ भारत अभियान ' शुरू किया। इस मिशन का उद्देश्य 2 अक्टूबर 2019 यानी गांधीजी की 150वीं वर्षगाँठ तक भारत को पूरी तरह से गंदगीमुक्त कर देने का है। अब यह अभियान कितना सफल हुआ या होगा ये तो समय की गोद में है लेकिन इतना तय है कि इसने सार्वजनिक विमर्श में स्वच्छता को ला दिया। चूँकि यह पूरा मिशन ही गांधीजी के विचारों पर टिका है इसलिए यह जानना अपरिहार्य है कि गांधी के लिए स्वच्छता का क्या अर्थ था और वो इसे किन किन संदर्भों में व्याख्यायित करते थे। गांधीजी के संबंध में स्वच्छता को किसी एकहरी व्याख्या की बजाय बहुस्तरीय ढंग से देखना होगा। स्वच्छता पर गांधीजी का कितना बल था इसे इसी बात से समझा जा सकता है कि वो स्वच्छता को राजनीतिक स्वतंत्रता की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानते थे।

सबसे पहले व्यक्ति के स्तर पर देखें तो गांधीजी का मानना था कि स्वच्छता मानव जीवन का एक अपरिहार्य अंग है और इसे अलग से किसी कार्य के रूप में देखने की बजाय जीवन शैली का स्वाभाविक हिस्सा बना लेना चाहिए। उन्होंने यहाँ तक कहा कि 'शौचालय उतने ही स्वच्छ होने चाहिए जितना की बैठकखाना'। गांधीजी अक्सर धार्मिक स्थलों पर व्याप्त गंदगी को लेकर चिंतित रहते थे और कहा करते थे कि ऐसी दशा में किसी धार्मिक प्रयोजन की शुद्धता की सोच भी बेमानी है।कुंभ मेले में अपने एक बार के भ्रमण के बारे में उन्होंने यंग इंडिया में लिखा 'धर्म के नाम पर पवित्र गंगा को अशुद्ध किया जा रहा है। मैंने वहां व्यापक अस्वच्छता देखी- भौतिक और नैतिक दोनों रूपों में।' वस्तुतः गांधी एक राजनीतिक व्यक्ति के साथ साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी थे इसीलिए स्वच्छता जैसे 'साधारण' विषय पर उन्होंने खूब काम किया जबकि उसी दौर के एलीट नेता इससे बचते रहे।हमसब जानते हैं कि गंदगी तमाम प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है और उस समय तो प्लेग जैसी महामारी से बड़ी संख्या में लोग मर रहे थे। इसलिए स्वच्छता का महत्व आमजनमानस तक प्रेषित करने के लिए गांधीजी दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होंने कहा कि 'हर व्यक्ति अपना सफाईकर्ता है'। कुल मिलाकर कहें तो व्यक्ति के स्तर पर गांधीजी

ने सफाई को अनिवार्य दिनचर्या का हिस्सा न केवल माना बल्कि उसको लागू करने के लिए बहुत मेहनत की।

सामाजिक स्तर पर गांधीजी के स्वच्छता के दर्शन को देखें तो यह अस्पृश्यता उन्मूलन से जुड़ता है। वस्तुतःगांधी एक तरफ स्वतंत्रता की लड़ाई तो लड़ ही रहे थे दूसरी तरफ समाज के अंतिम व्यक्ति के आजादी की आंतरिक लड़ाई भी लड़ रहे थे।ध्यातव्य है कि शुरू से ही सफाई को एक 'निम्न कार्य' समझे जाने की मान्यता रही है और श्रम में इस प्रकार के अप्राकृतिक विभेदीकरण के कारण सफाईकर्मियों को सामाजिक दृष्टि से हेय समझा जाता रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो सामाजिक पदानुक्रम में निम्न श्रेणी में डाल दिए गए समुदायों से सफाई का कार्य लिया जाता था।यही वजह थी कि सफाई कार्य में संलग्न समुदाय को 'अंत्यज' कहा गया तथा उन्हें अस्पृश्य माना गया। गांधीजी ने अस्पृश्यता की इस मिथ्या धारणा को खंडित करने के लिए न केवल स्वयं शौचालय की सफाई की बल्कि इसके लिए व्यापक जनांदोलन भी चलाया। उनका मानना था कि जब तक व्यक्ति स्वयं सफाई नहीं करता तथा इसके लिए 'दूसरों' को नियुक्त करता रहेगा तब तक वह अस्पृश्यता के विरूद्ध खड़ा नहीं हो सकता। इस प्रकार उन्होंने स्वच्छता को सामाजिक एकता और समरसता का एक उपकरण माना। साथ ही सामुदायिक स्तर पर स्वच्छता के महत्व पर नवजीवन में उन्होंने विस्तार से लिखा। उनका यहाँ तक मानना था कि सार्वजनिक जगहों पर थूकने जिससे तमाम प्रकार की संक्रामक बीमारियों जन्म लेती हैं, एक प्रकार का आपराधिक कृत्य है।

स्वच्छता को लेकर एक लड़ाई गांधीजी सभ्यता के संदर्भ में भी लड़ रहे थे। दरअसल, गोरे शासक जिन काले उपनिवेशवासियों पर शासन कर रहे थे उन्हें 'गंदा' कहकर सार्वजनिक जीवन में उनकी उपस्थिति को नकारते थे। गांधीजी ने साफ सुथरे रहने को पश्चिमी सभ्यता का एकाधिकार मानने से इंकार किया कहा कि हम भारतीय भी स्वच्छता के मूल्य को मानते और पालन करते हैं। दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान ही गांधीजी ने स्वच्छता को सत्याग्रह का अभिन्न अंग बना लिया तथा कहा कि यह मानने की कोई वजह नहीं है कि भारतीय ब्रिटिशों की तरह साफ नहीं रह सकते इसलिए इन्हें समान अवसर नहीं मिल सकता। अफ्रीका के बाद तो गांधीजी जब भारत वापस आए तो अनेक चरणों में उन्होंने स्वच्छता अभियान चलाया। इसकी दो प्रमुख वजह थी। एक तो यह कि अंग्रेजों के विरूद्ध चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन को अधिक धारदार बनाने के लिए गांधीजी एक 'साझे मोर्चे' का निर्माण कर रहे थे जिसके लिए अनिवार्य था कि अस्पृश्यता जैसी बुराई समाप्त हो। दूसरी तरफ वो भारत को न केवल अंग्रेजों से आजाद करवाना चाहते थे बल्कि देश की आंतरिक स्वतंत्रता के भी पक्षधर थे। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक स्तर पर भी गांधीजी ने स्वच्छता के महत्व को समझा- ' मैले पांव को मैं अपने मन में भी प्रवेश न करने दूं', गांधीजी यहां भौतिक स्वच्छता के साथ साथ अंतर्मन की स्वच्छता की अनिवार्यता पर भी बल दे रहे हैं। स्वच्छता पर गांधीजी के दर्शन को किसी एक लेख में समेटना न तो संभव न ही ऐसा दुस्साहस करने का मेरा कोई उद्देश्य। कहने का भाव इतना ही है कि गांधीजी के विचार और कार्य वर्तमान 'स्वच्छ भारत अभियान ' के लिए प्रस्थान बिंदु का कार्य कर सकते हैं।

2019 तक स्वच्छता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है कि इसको एक 'सामाजिक उद्यम' में बदला जाए। चूंकि यह लोगों की आदतों से जुड़ा मसला है इसलिए जबतक इसके महत्व को सही ढंग से प्रसारित नहीं किया जाएगा तब तक इसकी सफलता संदिग्ध ही रहेगी। श्रम के अवैध सोपानीकरण को समाप्त कर सामाजिक-सामुदायिक समानता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि सरकार और समाज के गणमान्य व्यक्ति प्रतीकात्मक रूप से ही सही सफाई कर एक आदर्श प्रस्तुत करें।हालांकि सफाई के नाम पर फूहड़ दिखावे से बचना ही चाहिए। स्वच्छता स्वस्थ जीवन के लिए भी आवश्यक है इसलिए इसे पाठ्यक्रम का भी हिस्सा होना चाहिए। बच्चों को शुरू से ही इसके महत्व से परिचित कराना चाहिए ताकि यह उनके जीवनचर्या के साथ ही जुड़ जाए। प्रधानमंत्री के प्रयासों से स्वच्छता को लेकर व्यापक जागरूकता फैली है तथा काफी समय बाद सफाई जैसे 'साधारण' विषय को सरकारी स्तर पर इतनी गंभीरता से उठाया गया है। अंत में यही कि 2 अक्टूबर 2019 को जब गांधीजी अपने सपने के भारत को देखें तो उन्हें कम से कम स्वच्छ भारत दिखे। यह हमारी-आपकी और सरकार सबके सम्मिलित प्रयासों से ही सफल हो सकता है। ❑

जानिए, स्वच्छ भारत अभियान से कैसे बदल रही देश की तस्वीर!

नवोदित सक्तावत

2 अक्टूबर, 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया। यह क्रांति विचारों की या बल प्रदर्शन की नहीं बल्कि जनजागरूकता और नागरिकता बोध को लेकर उठाए गए कदम की थी। यह क्रांति आदतों की थी, व्यवहार की थी, आचरण की थी। इसका संबंध स्वास्थ्य से और सलीके से था। यह क्रांति सफाई की थी। स्वच्छ भारत अभियान का आरंभ इस दिन से हुआ और तीन साल में यह एक विराट आंदोलन बन चुका है। क्या महिला-क्या पुरुष, क्या बच्चे-क्या बूढ़े, क्या अमीर-क्या गरीब, क्या आम-क्या खास, सभी वर्ग और तबके इस एक मिशन को लेकर एकजुट, एकमत हैं; इसमें कोई दोराय नहीं है।

आज विश्व में भारत की इस मिशन के कारण स्वच्छता के प्रति बेहद गंभीर देश की छवि बनी है और हमें विश्व में एक सफाई पसंद जागरूक राष्ट्र के रूप में रेखांकित किया जाने लगा है। निश्चित ही 2014 से पहले ऐसा नहीं था। कहा जा सकता है कि भाजपा की सरकार ने पक्ष, विपक्ष सभी को समाहित कर केवल और केवल देश को आगे बढ़ाने के क्रम में यह बड़ा बीड़ा उठाया था, जिसमें आशातीत सफलता मिल रही है।

देश में शौचालय क्रांति

यदि हम कहें कि देश में शौचालय को लेकर जो क्रांति आई है, वह अभूतपूर्व है तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। स्वच्छता मिशन में शौचालय सबसे अहम हिस्सा है। बरसों से देश की ग्रामीण जनता खुले में शौच के लिए जाती रही है। इससे गंदगी फैलती थी और महिलाएं सुरक्षित नहीं थीं। पीएम मोदी ने पहल करते हुए देश को खुले में शौच से मुक्त करने का बीड़ा उठाया। आज नतीजा हमारी आंखों के सामने है।

जिनके घरों में शौचालय नहीं थे, उनके लिए सरकार अनुदान देकर शौचालयों का निर्माण करवा रही है। इस क्रांति से महिलाओं व बच्चों को सबसे अधिक लाभ पहुंचा है। जागरूकता इस स्तर तक पहुंची कि बिना शौचालय के बहुओं ने ससुराल में जाने से इंकार किया, जिसके चलते ससुराल वालों को शौचालय का निर्माण करना पड़ा। इसी मार्मिक विषय पर अभिनेता अक्षय कुमार भी जुड़े और 'टॉयलेट एक प्रेमकथा' नामक फिल्म लेकर आए। इसके माध्यम से उन्होंने शौचालय के महत्व को बताया और जनता ने इसे बेहतर प्रतिसाद दिया। 2014 के पहले यह सब नहीं था, निश्चित ही भाजपा सरकार को देश में युगपत क्रांति लाने का श्रेय जाता है।

स्कूलों, संस्थाओं के संस्कार

स्वच्छता को लेकर जागरूकता का ये आलम है कि स्कूलों, संस्थाओं ने भी कमर कस ली है। अब वहां स्वच्छता को महज किताबी पाठ नहीं वरन एक संस्कार बनाकर आदतों में ढाला जा रहा है। समय-समय पर स्कूलों में सफाई की जा रही है, जिसमें छात्र, शिक्षक सभी उत्साह से भाग ले रहे हैं। संस्थाएं अपनी ओर से शिविर लगाकर लोगों को सफाई का महत्व बता रही हैं।

समाजों के चल समारोह में आया बड़ा बदलाव

एक बड़ा बदलाव विभिन्न समाजों द्वारा किए जाने वाले सार्वजनिक समारोहों को लेकर देखने में आया है। 2014 के पहले यह होता था कि बारातें निकलती थीं और बारात का स्वागत करने वाले अपने खाने-पीने की चीजों के खाली पैकेट वगैरह वहीं सड़क पर फेंककर आगे निकल जाया करते थे। इससे वहां गंदगी का ढेर बढ़ता जाता था। अब इसमें बदलाव आया है। अब बारात निकलती है तो आयोजक पहले से ही सफाईकर्मियों की तैनाती सुनिश्चित करके चलते हैं। वे तुरंत सड़क को साफ करते, कचरा उठाते चलते हैं। यही काम चल समारोहों में भी किया जा रहा है। ऐसे में आयोजन में भी खलल नहीं पड़ती है और सफाई भी बनी रहती है। निश्चित ही आदतों में यह बदलाव देश में आए बदलाव का सूचक है।

सफाई में अव्वल आए इस शहर में घटा बीमारियों का ग्राफ

सफाई सर्वेक्षण की सूची में देश भर में अव्वल आए मध्यप्रदेश के शहर इंदौर में स्वच्छता अभियान लगातार नए सोपानों पर अग्रसर है। यहां सबसे उल्लेखनीय बात सामने आई है कि शहर में गंदगी से होने वाली बीमारियों का ग्राफ पहले से गिरा है। स्थानीय निकाय का दावा है कि यहां सफाई के अभाव में होने वाले रोगों में 70 फीसदी तक गिरावट आई है। शहर से कचरा पेटियां हट गई हैं और घर-घर जाकर कचरा लिया जा रहा है। खुले में शौच पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इन सब प्रयासों का परिणाम ये हुआ है कि शहर में स्वास्थ्य का स्तर अच्छा हो गया है।

हर परिवार को होगी 50 हजार की वार्षिक बचत

यूनिसेफ का कहना है कि स्वच्छ भारत अभियान देश के लिए आर्थिक रूप से भी लाभकारी है। इससे प्रत्येक परिवार को वार्षिक रूप से 50 हजार रुपए की बचत होगी। यह बात यूनिसेफ ने 12 जिलों में 10 हजार ग्रामीण परिवारों के बीच किए गए एक अध्ययन के आधार पर कही है। इस अध्ययन में पता लगाया गया कि सफाई अभियान पर सरकार की ओर से खर्च किए जा रहे 1 रुपए से कितना लाभ होगा। निष्कर्ष निकला कि हर 1 रुपए की तुलना में 4.30 रुपया बचाने में मदद मिलेगी।

अभिनेताओं और खिलाड़ियों ने भी दिखाई दिलचस्पी

स्वच्छता अभियान महज आम लोगों तक ही सीमित नहीं रहा है, इसे लेकर सेलिब्रिटी वर्ग ने भी रुचि दिखाई है। स्वयं पीएम नरेंद्र मोदी ने जब हाथों में झाड़ू उठाकर सफाई करके दिखाई तो अन्य ख्यात लोगों को भी इससे प्रेरणा मिली। खिलाड़ियों में सचिन तेंदुलकर, सिने कलाकारों में शिल्पा शेट्टी, रितिक रोशन आदि ने अपने क्षेत्र में स्वयं सफाई अभियान में भाग लिया। अभिनेता रणबीर शौरी ने पिछले दिनों मुंबई के एक बीच पर एक दल के साथ मिलकर सफाई की और समुद्र तट से बड़ी संख्या में कचरा निकाला।

राजनीति नहीं, राष्ट्रनीति का अभियान

स्वच्छ भारत अभियान का राजनीति से कोई संबंध नहीं है। यह राजनीति से मुक्त है और इसे राष्ट्रनीति का अभियान कहना अधिक श्रेयस्कर होगा। इसमें देश के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी सुनिश्चित की गई है कि वह अपने आसपास सफाई बनाए रखे और अपने घर का कचरा सड़कों पर ना फेंके। चूंकि, यह देशभक्ति से प्रेरित अभियान है, ऐसे में इसमें बढ़ चढ़कर लोग सहभागिता करते नज़र आ रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार ने की अनूठी पहल

स्वच्छ भारत अभियान के क्रम में उत्तरप्रदेश सरकार का अत्यंत सराहनीय कदम देखने को मिला है। उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में पूर्णतया स्वच्छता को सुनिश्चित करने के लिए शासकीय कार्यालयों से शुरुआत की। उन्होंने इस वर्ष मार्च में पद संभालते ही सभी सरकारी कार्यालयों में पान, गुटखा, तंबाकू उत्पाद के सेवन पर प्रतिबंध लगा दिया। पान खाकर पीक थूकने पर पाबंदी लगाई और दीवारों को खराब करने वालों को दंड देना सुनिश्चित किया। कहना होगा कि इस पहल का सकारात्मक प्रतिसाद मिला और आज उप्र में व्यापक पैमाने पर सफाई एक आदत बन चुकी है। ❑

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं। ये उनके निजी विचार हैं।)

यह योजना नहीं संकल्प है

गौरव दफ्तरी

जीवन में परिवर्तन कभी भी कष्टदायक नही होता है, अपितु यह भविष्य के नव-निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे ही एक सामाजिक परिवर्तन की नींव प्रधानमंत्री मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान के जरिये रखी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वाकांक्षी योजना "स्वच्छ भारत अभियान" ने अपनी सफलता के तीन वर्ष पूर्ण कर लिये है। हम जानते है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने "स्वच्छ भारत" का सपना देखा था, जो अब तक अधूरा है। इसे पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री ने इस योजना को शुरू किया। गौरतलब है की जबसे नरेंद्र मोदी ने सत्ता की कमान संभाली है। एक के बाद एक ऐसी योजनाओं का शुभारम्भ किया है,जो जनता से सीधे तौर पर सरोकार रखती है।

उनमें से सबसे प्रमुख स्वच्छ भारत अभियान है। प्रधानमंत्री मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को गाँधी जयंती के अवसर पर इस योजना को आरंभ किया था। जाहिर है कि इस योजना को 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। योजना को आरम्भ करने से पहले 15 अगस्त 2014 को स्वतंत्रता दिवस के दिन जब प्रधानमंत्री ने स्वच्छता और शौचालय की बात कही थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अभियान को एक मिशन बनाने का संकल्प लिया और इसमें काफी हद तक सफल भी हुए हैं। दरअसल, स्वच्छ भारत अभियान एक ऐसी योजना है जिसने लोगो को सफाई संबंधी आदतों को बेहतर बनाना, लोगों को गंदगी से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताना है। प्रधानमंत्री इस बात को बखूबी जानते हैं कि अगर भारत को स्वच्छ बनाना है तो, इसके लिए सबसे जरूरी बात है कि इस योजना को जन–जन तक पहुँचाया जाए। बगैर जन-जागरूकता के इस मिशन को पूरा नहीं किया जा सकता।

वही स्वच्छता को चुनौती मानकर स्वयंसेवी संस्थाएँ इस ओर एक बड़ा कार्य कर रही हैं। प्रधानमंत्री की पहल पर इस काम में अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ, देश के नामचीन लोग और समूहों ने आगे आकर स्वच्छता में अपना योगदान देने का संकल्प लिया है। प्रत्येक सांसद, विधायक और अन्य लोग इस कार्य में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। इस समय देश में लगभग 32 लाख स्वयंसेवी संस्थाएँ हैं। इसमें से पाँच सौ से अधिक स्वच्छता और इससे जुड़े अन्य कार्यों में लगी हुई हैं। इसी तरह बीमारियों, पर्यावरण प्रदूषण, शिक्षा, जागरूकता और निर्धन परिवारों में काम करने वाले हजारों स्वयंसेवी संस्थाएँ कार्य करती हैं। ये एनजीओ स्वच्छता अभियान में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इससे जहाँ देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आएगी। वहीं, विकास की धारा भी आगे बढ़ेगी। आजादी के 70 वर्षों के बाद भी स्वच्छता एक समस्या

के रूप में आज भी मौजूद है। इसलिए इसे वृहद स्तर पर देखने और समझने की आवश्यकता है।

विश्व के विकसित देशों में विकास और आधुनिकता के जो मानक तय किये गए है, उनमें स्वच्छता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मन, वाणी, कर्म, शरीर, हृदय, चित्त, समाज, परिवार, संस्कृति और व्यवहार से लेकर धर्म और विज्ञान तक में स्वच्छता का विशेष महत्त्व है, बिना स्वच्छता के जीवन, परिवार, समाज, संस्कृति, राष्ट्र, विश्व और चेतना के उच्च आदर्श को प्राप्त करना कठिन है। केन्द्र में नई सरकार बनने के बाद ऐसी अनेक योजनाएँ मिशन के रूप में क्रियान्वित करने का बीड़ा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उठाया है।

स्वच्छता को लेकर केन्द्र सरकार कितनी गंभीर है इसका अंदाज़ा चारों ओर सरकारी, अर्ध-सरकारी और गैर-सरकारी कार्यों में देख सकते हैं। अगर जागरूकता की बात करे तो प्रधानमंत्री मोदी ने जब स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया था, तब देश का एक भी राज्य खुले में शौच की समस्या से मुक्त नहीं था। आज छह राज्य और लाखों गांव खुले में शौच की समस्या से मुक्त हो चुके हैं। इस सामाजिक बुराई से बाहर निकलना इतना आसान नहीं है।

दरअसल, इस अभियान को सफल बनाने में आम लोगों का मिल रहा योगदान भी सराहनीय है। इस समस्या के प्रति लोग बहुत अधिक जागरूक हो चुके हैं और उन्हें जिस तरह से सरकार से मदद मिल रही है। उससे लगता है कि 2 अक्टूबर 2019 तक ये मिशन पूरा हो जायेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत स्तर पर आपसी संवाद, उस पर अमल और स्वच्छता से लोगों को जोड़ने के लिए उनके व्यावहारिक बदलाव पर जोर दिया जा रहा है। राज्यों को यह छूट दी गई है कि वो अपने स्थानीय जरूरतों और मांगों के अनुरूप शौचालयों का निर्माण कराएं। सरकार ने शौचालय बनाने के लिए दिए जाने वाली रकम को भी बढ़ाकर 10 हजार से 12 हजार रुपये कर दिया है। इसके अलावा ग्राम पंचायतों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए भी अलग से पैसे दिए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान का सकारात्मक असर दिखने लगा है।

स्वच्छ भारत अभियान के बाद देशभर में साफ-सफाई की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। सफाई को लेकर लोगों की सोच बदल रही है। स्वच्छ भारत के कारण भारत ने यात्रा और पर्यटन इंडेक्स में 12 स्थान की छलांग लगाई है। भारत अब 40वें स्थान पर पहुंच गया है, जबकि 2015 में 52वें और 2013 में 65वें स्थान पर था। स्वच्छ भारत अभियान अब सिर्फ एक कार्यक्रम मात्र नहीं है, यह एक तरह का आचरण परिवर्तन का मिशन बन गया है। जन सहभागिता से चलने वाले इस अभियान का दायरा 2014 के 42 प्रतिशत के मुकाबले बढ़कर 62 प्रतिशत हो गया है। 'स्वच्छ सर्वेक्षण-2017' के परिणामों से पता चलता है कि स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत किये जा रहे प्रयासों से शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता पर सकारात्मक असर पड़ा है। स्वच्छ भारत अभियान का असर जमीनी स्तर पर नजर आ रहा है।

आज इस अभियान में शामिल होने के लिए लोगों को आमंत्रित करने के कारण स्वच्छता अभियान एक राष्ट्रीय आंदोलन बन गया है। नरेन्द्र मोदी ने कहा था , "2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर भारत उन्हें स्वच्छ भारत के रूप में सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि दे सकता है।" स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से लोगों में जिम्मेदारी की भावना जगी है। देश भर में लोग सक्रिय रूप से स्वच्छ भारत अभियान में शामिल हो रहे हैं और महात्मा गांधी का 'स्वच्छ भारत' का सपना अब साकार होने लगा है।

"स्वच्छ भारत " स्वस्थ भारत " विकसित भारत ! ❑

स्वच्छ भारत का साकार होता सपना

राजीव प्रताप सिंह

महात्मा गांधी ने लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा पर बल दिया था। उन्होंने भी सभी नागरिकों से एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने का आह्वान किया था। वे भारत को एक स्वच्छ भारत बनाना चाहते थे। इस स्वप्न को पूरा करने के लिए ही स्वच्छ भारत अभियान भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया। इस अभियान के तहत केंद्र सरकार अगले पांच वर्षों में महात्मा गाँधी के सपनो का भारत बनाने का प्रयास कर रही है। इससे हम गांधी जी की 150वीं जयंती को स्वच्छता के इस संकल्प की सिद्धि के रूप में देख सकते हैं। यह अभियान प्रतिवर्ष सौ घंटे के श्रमदान के लिए लोगों को प्रेरित करता है।

स्वच्छता क्यों जरूरी है इसके प्रचार-प्रसार के लिए सरकार ने साहित्य,कला,संगीत,खेल तथा फ़िल्म जगत के चर्चित लोगों को भी स्वच्छता अभियान से जोड़ा,जिसमें कैलाश खेर,मृदला सिन्हा, सचिन तेंदुलकर, बाबा रामदेव, शशि थरूर, अनिल अंबानी, कमल हसन, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा और तारक मेहता का उल्टा चश्मा की टीम जैसी नौ नामचीन हस्तियों को जिम्मेदारी दी गई। महात्मा गाँधी ने कहा था, स्वच्छता आजादी से महत्त्पूर्ण है, मौजूदा सरकार ने इसकी गंभीरता को समझते हुए इस महत्वपूर्ण योजना की शुरूआत की। 2011 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण भारत में सिर्फ 30 प्रतिशत लोगों के पास ही शौचालय था और उसमें भी कुछ ही लोग उस शौचालय का प्रयोग करते थे। अभी-अभी हमने स्वच्छ भारत अभियान का तीसरा वर्षगांठ मनाया है।

2014 में यूएन की एक रिपोर्ट आई थी, जिसमें कहा गया था कि भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी खुले में शौच करती है। इसी रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए गाँधी जयंती के अवसर पर 2014 में “स्वच्छ भारत अभियान” की शुरुआत की गई । इसके दो प्रमुख उद्देश्यों में एक तो सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर साफ-सफाई तथा दूसरा भारत के गावों को खुले में शौच से मुक्त करना है । इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हम तब-तक सफल नहीं हो सकते थे, जब तक कि इसे जनसरोकार से न जोड़ा जाए। कैलाश खेर के गाए इस गीत ने स्वच्छता के प्रति लोगो को जागरूक करने में महती भूमिका निभाई है. 'स्वच्छ भारत का इरादा, इरादा कर लिया हमने देश से अपने वादा' यह स्वच्छ भारत अभियान के थीम सांग की प्रथम पंक्ति है। इस गीत में भी सबकी भागीदारी पर बल दिया गया है।

एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय गावों में लोगों के शौचालय न जाने के लिए जाति एक बहुत बड़ा कारक है। यही कारण है कि लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने से पहले उनमें एक मानसिक चेतना विकसित किया जाए कि स्वच्छता हमारे स्वास्थ्य से जुड़ा विषय है। इसके लिए हम सभी का आगे आना आवश्यक है। इसीलिए भारत में पहली बार प्रधानमंत्री मोदी ने भी स्वयं श्रमदान करके स्वच्छता अभियान के प्रति लोगों को जागरूक किया। इस अभियान के तहत वर्तमान केंद्र सरकार ने लगातार अनेक योजनाएँ शुरू की। उन योजनाओं के सकारात्मक परिणाम आज हमारे समक्ष है। इस योजना के तहत सबसे बड़ा काम जो मौजूदा सरकार ने किया है, वह है स्वच्छता के प्रति 'दायित्वबोध'।

पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय से प्राप्त आकड़ों के अनुसार इस अभियान के अंतर्गत पांच करोड़ से भी अधिक शौचालयों का निर्माण कराया गया है। भारत के साढ़े छः लाख गावों में से ढाई लाख से भी ज्यादा गांव खुले में शौच से मुक्त हो गए है। इसके साथ ही 220 जिले और छः राज्य भी खुले में शौच से मुक्त हो गए है। इन छह राज्यों में सिक्किम, हिमाचल प्रदेश,उत्तराखंड, गुजरात तथा केरल हैं। आज भारत में शौचालयों की मौजूदगी 70 प्रतिशत है, जो 2014 में 39 प्रतिशत थी।

यूनिसेफ का कहना है कि स्वच्छ भारत अभियान की बदौलत हर भारतीय परिवार को सालाना करीब 50 हजार रुपये की बचत होगी। ये सभी आकड़े इस योजना की केंद्र सरकार के इस अभियान की सार्थकता सिद्ध करते हैं। गौरतलब है कि केंद्र सरकार की इस योजना की विशेष बात यह है कि इसमें इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि आज भी भारत की अधिकतर आबादी गावों में निवास करती है। यही कारण है कि केंद्र सरकार ने इस योजना के अंतर्गत गावों में अपेक्षाकृत अधिक शौचालयों का निर्माण कराया। इस अभियान का एक और मुख्य उद्देश्य देश से मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करना है। विश्व बैंक ने इस अभियान की सार्थकता को देखते हुए भारत सरकार को डेढ़ अरब डॉलर का कर्ज भी देने का दावा किया है।

इस योजना की सबसे बड़ी सफ़लता यह है कि आज लोगो में स्वच्छता के प्रति एक दायित्वबोध का भाव है। इस दायित्वबोध के कारण आज लोग इस बात को समझने लगे हैं कि स्वच्छता किसी सरकार की नहीं, किसी व्यक्ति की नहीं अपितु एक सामूहिक प्रयास की मांग करता है। आज इस बात के अनेक उदाहरण भी हमारे समक्ष हैं जिसमें स्वच्छता के लिए लोगों ने धारा के विपरीत जाकर निर्णय लिया और इस अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पिछले दिनों स्वच्छता सर्वेक्षण में नंबर वन पाए गए। वहां जो आकड़े निकलकर सामने आएं हैं वह चौकाने वाले हैं। इंदौर में दवाओं की बिक्री में 15 प्रतिशत की कमी एवं बीमारियों में 70 प्रतिशत की कमी आई है। ससुराल से महिलाओं का इसलिए वापस चले जाना क्योंकि वहां शौचालय नहीं है। इसके साथ–साथ लोटा छीनो अभियान जैसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं जो स्वच्छ भारत अभियान की सार्थकता को बताते हैं। ❑

स्वच्छता की दिशा में भगीरथ प्रयास

महेश तिवारी

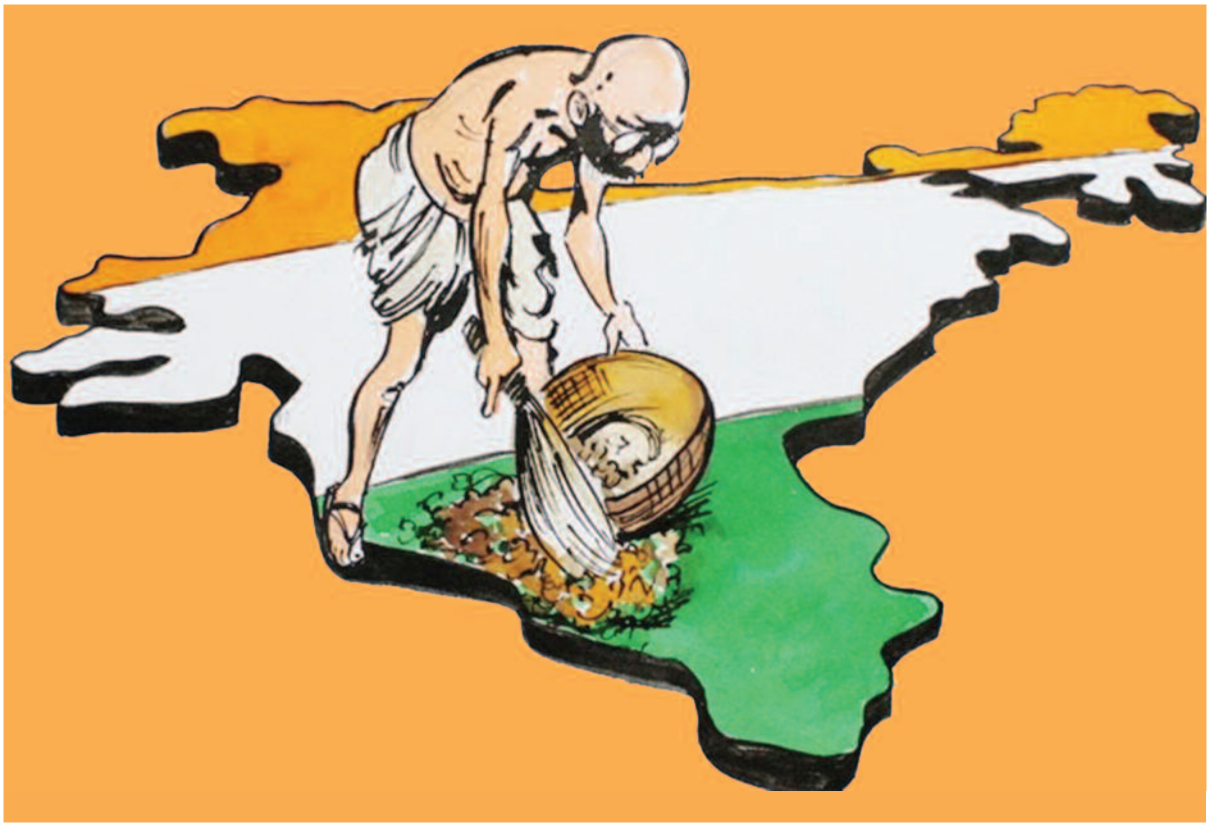

गांधी और स्वच्छता दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं। ग़ांधी की दिनचर्या की शुरुआत ही स्वच्छता के कर्मों से शुरू होती थी। मगर देश का दुर्भाग्य है कि आज़ादी के बाद देश की सबसे अधिक समय तक शासन करने वाले दल ने केवल गांधी के नाम पर राजनीति ही की। अतएव उनके विचारों और आदर्शों को तो तिलांजलि दे दी गई। स्वच्छ समाज देश की नैसर्गिक आवश्यकताओं में से एक है। आज़ादी के बाद देश की राजनीति ने बड़े-बड़े राजनीतिक सुधार की बात तो की, लेकिन समाज की सबसे बड़ी सामाजिक बुराई पर ध्यान नही दिया जो समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याओं की जननी है।

महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को साकार रूप देने का अगर भगीरथ प्रयास किसी सरकारी व्यवस्था ने किया, तो उसमें अग्रणीय पंक्ति में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने किया।

गांधी और स्वच्छता-

गांधी के अनुसार उनका जीवन ही संदेश है। फ़िर ऐसी विराट शख्सियत के जीवन के प्रत्येक पहलू से देश और समाज कुछ न कुछ विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकता है। वैसे तो गांधी जीवन के बहुत सारे उद्देश्य थे, लेकिन उनमें एक उद्देश्य उनका स्वच्छ भारत की परिकल्पना भी थी। तभी तो उनके दिनचर्या की शुरुआत सुबह से शुरू हो जाती थी। जिसमें उनका पहला काम अपने परिवेश को स्वच्छ करना रहता था। आज की स्थिति में अगर किसी ने गांधी के स्वच्छता को साकार रूप देना का काम किया है, तो वह वर्तमान में देश की मोदी सरकार है, क्योंकि उस दौर में स्वच्छता का संदेश देने के लिए अगर झाड़ू गांधी जी ने उठाया था, तो वर्तमान में मोदी सरकार भी उन्हीं के नक्शे कदम पर चलकर स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत की परिकल्पना को सिद्ध करने में लगी हुई है। गांधी के सपनों का स्वच्छ भारत बनाने की दिशा में मोदी सरकार ने सार्थक प्रयास

किया है। जो अब अपने परिणामों से सूचित कर रही है कि 2019 में जब देश गांधी जी की 150 वीं जन्मजयंती मनाने के लिए एकत्रित होगा। उस समय देश गांधी के सपनों के भारत के करीब पहली पंक्ति में खड़ा होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया, और इसके सफल कार्यान्वयन के लिए देश के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुडने की अपील की। वह अपील आज के दौर में अपार जनसमूह का रूप ले चुकी है। हम अपने लेख में गांधी के स्वच्छ भारत के सपनों और वर्तमान भारत की रूपरेखा के बीच तारतम्यता को लेकर आगे बढ़ते हैं।

गांधी व्यक्ति नहीं, विचार-

गांधी देश के समक्ष व्यक्ति नहीं, विचार के रूप में प्रतिस्थापित हुए हैं , लेकिन उनके विचारों का सबसे अधिक दोहन उनके विचारों के झंडाबरदारों ने ही किया। गांधी के विचारों को छोटा बताने की कोशिश की गई। अगर गांधी के विचारों और शिक्षा पद्धति पर ही आज़ादी के समय की तत्कालीन सरकार चलती। तो आज़ादी के लगभग सात दशक बाद देश के लोगों को मूलभूत बातें जैसे खुले में शौच मुक्त भारत आदि बतानी नहीं पड़ती। लेकिन बीते कुछ समय तक की राजनीतिक और सामाजिक अकर्मण्यता ने देश को राजनीति के स्तर पर कमजोर करने के साथ स्वच्छता और अन्य सामाजिक क्षेत्रों में भी कमजोर किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि साफ-सफाई, ईश्वर भक्ति के बराबर है और इसलिए उन्होंने लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा दी थी और देश को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने 'स्वच्छ भारत' का सपना देखा था जिसके लिए वे चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एकसाथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गांधी

रोजाना सुबह चार बजे उठकर अपने आश्रम की सफाई किया करते थे। वर्धा आश्रम में उन्होंने अपना शौचालय स्वयं बनाया था जिसे वह प्रतिदिन साफ करते थे। जो सपना आज के दौर में मोदी सरकार के नेतृत्व में सफ़ल होता हुआ दिख रहा है।

महात्मा गांधी का स्वच्छता को लेकर विज़न -

महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया और इसके सफल क्रियान्वयन के लिए देश के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की। इसके पहले गांधी के स्वच्छ भारत को लेकर स्पष्ट विचार थे। उनके मुताबिक हाथ में झाड़ू और बाल्टी लेकर ही देश और अपने आस-पड़ोस को स्वच्छ बनाया जा सकता था। एक बार एक अंग्रेज ने महात्मा गांधी से पूछा, यदि आपको एक दिन के लिए भारत का बड़ा लाट साहब बना दिया जाए, तो आप क्या करेंगे। गांधीजी का उत्तर चौंकाने वाला था, उन्होंने कहा कि वे राजभवन के समीप की गंदगी दूर करने का प्रयास करेंगे। दोबारा पूछने पर भी वहीं उत्तर दिया। गांधी के इन उत्तरों से अंदाजा लगाया जा सकता है, कि गांधी जी स्वच्छता के प्रति कितने संजग थे। आज के दौर में उसी लग्न और संजीदगी के साथ स्वच्छ भारत का सपना देश में मोदी सरकार पूर्ण करने में लगी है। गांधी के विचार के अनुसार अगर लोग अपने हाथ में झाड़ू और बाल्टी नहीं लेंगे, तब तक आप अपने नगरों और कस्बों को स्वच्छ नहीं रख सकते हैं। एक बार गांधी जी ने एक स्कूल को देखने के बाद कहा था, कि आप अपने छात्रों को किताबी पढ़ाई के साथ-साथ खाना पकाना और सफाई का काम भी सिखा सके, तभी आपका विद्यालय आदर्श विद्यालय होगा। गांधी जी के विचार में आज़ादी से पहले स्वच्छता थी। इन तथ्यों से उजागर होता है, कि स्वच्छता उनकी पहली प्राथमिकता थी, लेकिन आज़ादी के तत्काल बाद उनके इस विचार को धूल-धूसर करने का षणयंत्र उनके अपनों ने ही देश में किया।

वर्तमान में स्वच्छ भारत के सार्थक परिणाम-

उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के कुछ गांवों की बात हो। या देश के अन्य हिस्सों की गाँव का बदलता स्वरूप गांधीजी के खुले में शौच मुक्त ग्रामीण परिवेश के सपनों को साकार करता प्रतीत होता है। बिजनौर के गांव धरमपुरा की ग्राम प्रधान ने अपनी मेहनत और लगन से गांव धरमपुरा को खुले में शौच से मुक्त करके दिखा दिया है कि महिलाएं अगर कुछ करने की ठान लें, तो वे बड़े-बड़े सामाजिक बदलाव ला सकती हैं। गौरतलब है कि भारत की आधी से ज्यादा आबादी 2014 तक खुले में शौच करने के लिए मजबूर थी। जो कि अनेक बीमारियां जैसे डायरिया, हैजा, टाइफाइड का कारण बनती थी। जिसके कारण कई बार बच्चों की मौत हो जाती थी। इसके साथ बीमारियों के अलावा खुले में शौच करने के कारण यह महिला सशक्तिकरण के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा थी, क्योंकि ग्रामीण इलाकों में लड़कियों और महिलाओं के साथ बलात्कार की

घटनाएं ज्यादातर ऐसे वक्त में होती हैं जब वे शौच के लिए खेत में जाती हैं। जिसमें स्वच्छ भारत अभियान के बाद कमी आई है।

मोदी सरकार के दृढ़ आत्मबल का परिणाम स्वच्छ भारत अभियान-

स्वच्छ भारत की शुरूआत देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की थी। हमारे देश के प्रधानमंत्री ने 2 अक्टूबर 2014 को इसकी शुरूआत खुद झाड़ू उठाकर की थी, और 2019 तक भारत को स्वच्छ राष्ट्र के रूप में देखने की संकल्पना देश के सामने रखी थी। वर्तमान समय में यह अभियान अपने सकारात्मक दृष्टिकोण को लेकर गांधी के सपनों को साकार करता हुआ दिख रहा है। यह हमारी पिछली सरकारों की कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति और जन सरोकार के विषय में न सोचने का ही कारण रहा है, कि जो काम स्वच्छता को लेकर आज़ादी के समय ही हो जाना चाहिए था। उस कार्य के लिए कर्तव्यपरायणता वर्तमान सरकार मोदी के नेतृत्व में लेकर आगे बढ़ रही है। देश की विडंबना देखिए, गांधी का राजनीतिक प्रयोग करने वाली राजनीतिक दलों ने कभी गांधी के विचारों पर ध्यान नहीं दिया। अगर दिया होता, तो देश को आज़ादी के सात दशक बाद यह नहीं सिखाना पड़ता, कि क्या उनके और उनके वातावरण के लिए उपयुक्त होगा। देश के नागरिक भी इस अभियान को सफल बनाने के लिए अपना भरपूर सहयोग दे रहे हैं।

महात्मा गांधी के विचारों को पूर्णतः प्रदान करने के लिए वर्तमान समय में सड़क, चौराहे, पब्लिक स्थान, रेलवे स्टेशन पर स्वच्छता काफ़ी हद तक दिखनी शुरू हो गई है। गंगा को स्वच्छ करने के लिए सरकार ने अलग मंत्रालय का निर्माण किया। यह सरकार का गांधी के उदेश्यों को पूर्ण करने का अनूठा प्रयास था। जिस उद्देश्य को प्राप्त करने में मोदी सरकार सफल भी हो रही है।

मोदी सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के कुछ पहलू-

देश के लोगों को खुले में शौच से मुक्त कराने के लिए सरकार ने 2 लाख 50 हजार सामुदायिक शौचालय, 2 लाख 60 हजार सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन की सुविधा प्रदान की है। वहीं सरकार ने शौचालय निर्माण पर 1828 करोड़ रूपये खर्च किये हैं। सरकार ने जनजागरूकता के लिए 625 करोड़ रूपये निर्धारित कर रखा है। जिसका सकारात्मक असर समाज पर पड़ता दिख रहा है। मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार भी मोदी सरकार से अनुप्रेरित होकर सूबे में पचास माइक्रान से पतली प्लास्टिक के उपयोग पर जुर्माना लगा चुकी है। इस कदम की भी सराहना होनी चाहिए, क्योंकि एक किलो प्लास्टिक जलाने से सर्वाधिक विषैली डायआक्सीजन गैसें 50 माइक्रो ग्राम तक फैलती है। इसके साथ नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत भी शवदाहगृह का निर्माण और पेड़-पौधो को लगाने की बात कहकर स्वच्छता मिशन में महती भूमिका अदा कर रही है। एक बात और मोदी सरकार के नेतृत्व में देश ने सच्चे अर्थों में महात्मा गांधी के सपनों के स्वच्छ राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर बढ़ रहा है। जिसमें सबसे दिलचस्प बात यह है कि गांधी के आंदोलन की भांति मोदी के स्वच्छता अभियान में भी जन समुदाय सहयोग करता दिख रहा है। फ़िर चाहे महाराष्ट्र के जिले सिन्धु दुर्ग को मिसाल का अनुपम उदाहरण ले। या फ़िर दूसरे राज्यों के अन्य जिलों का अनुशासनात्मक रवैये के प्रतिभूति के कारण ही स्वच्छता के सार्थक परिणाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं। महाराष्ट्र के सिंधु दुर्ग में तो गीले और सूखे कचरे का निस्तारण कैसे आदर्श तरीके से हो। उसकी पहल चल रही है। वहां पर गीले कचरे से बायोगैस, खाद, सूखे कचरे से कोयला और पॉलिथीन, बैग्स से पांच-पांच किलोमीटर की पांच सड़कें बनायी गई है। इस अभियान को संयुक्त राष्ट्र के यूनाइटेड डेवलपमेंट प्रोग्राम में शामिल किया गया है। कई शहरों में यह मॉडल लागू किया जा रहा है, और कर्नाटक, छत्तीसगढ़ की सरकार भी इस दिशा में कार्यरत है। सारांशतः मोदी सरकार के तत्वावधान में देश स्वच्छता के मिशन को लेकर आगे बढ़ रहा है। जो गांधी जी के सपनों के भारत निर्माण में एक चैन की भांति काम कर रहा है। जिसका सार्थक और असरदार प्रभाव पर्यावरण और समाज पर दिख रहा है। अभी गांधी के जन्मदिन की 150 वीं वर्षगांठ में लम्बा वक्त है, तब तक देश स्वच्छता की दिशा में और आगे बढ़कर एक दिन अग्रिम पंक्ति में होगा। ❑

स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने...

कनिष्का तिवारी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को जब स्वच्छ भारत मिशन इस देश की जनता के समक्ष रखा तब किसी ने ये सोचा भी नहीं था की इस देश में कोई प्रधानमंत्री कभी इस तरह की सोच भी लोगों के सामने रख सकता है। परन्तु राष्ट्रपिता के इस स्वप्न को पूरा करने की पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की और देश की जनता ने भी उनका भरपूर सहयोग किया। आज यह योजना प्रभावी ढंग से काम कर रही है। इसका परिणाम हमारे सामने है आज 55 करोड़ ग्रामीण जनता को खुले में शौच से निजात मिल गई है और भारत खुले में शौच से मुक्ति पाने की कगार पर है। जाहिर है यह आसान नहीं था, क्योंकि इस समस्या से लड़ना है। मगर पहले यह स्वीकार्यता भी जरुरी है कि स्वच्छता भी एक समस्या है। वर्ल्ड बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 40 % बच्चे स्वच्छता की कमी के कारण होने वाली बीमारियों के शिकार होते हैं । इस रिपोर्ट के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है कि गंदगी एक विकराल समस्या के रूप में अपनी जड़ें मज़बूत करती चली जा रहा थी और हम इस तरफ ध्यान नहीं दे रहे थे। किन्तु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक किया और बताया कि गंदगी स्वस्थ समाज के लिए कितनी घातक है। यह आश्चर्यजनक है कि खुले में शौच की प्रथा के खात्मे से प्रति वर्ष 1 लाख बच्चों की जान बचायी जा सकती है। हाल ही में अक्षय कुमार और भूमि पांडेरकर की सुपरहिट फिल्म "टॉयलेट-एक प्रेम कथा" इस सन्देश को सामने लेकर आई। जिसे दर्शकों ने काफी पसंद भी किया। इस बात से साफ़ है की आम जनता के बीच स्वच्छता का सन्देश बेहद सकारात्मक रूप से पहुँच रहा है। इससे पहले अमिताभ बच्चन ने भी लगातार स्वच्छ भारत मिशन से जुड़े कई विज्ञापन किये। जनता के बीच वे जितने लोकप्रिय हैं उतनी ही लोकप्रियता से वह इस सन्देश को लोगों के बीच लेकर आये। इसके साथ ही विद्या बालन जैसी अभिनेत्री ने भी स्वच्छ भारत मिशन, खुले में शौच जैसे विज्ञापनों के जरिये लोगो के बीच यह धारणा पैदा करने में काफी सहयोग दिया कि खुले में शौच एक गंभीर समस्या है।

कई कार्यक्रमों में सचिन तेंदुलकर, मुकेश अम्बानी समेत चर्चित लोगों ने आम लोगों के लिए प्रेरणा का काम किया। देश में इससे एक बड़ी जागृति आई है। मशहूर गायक कैलाश खेर का स्वच्छ भारत एंथम आज गली-गली कचरे वाले ट्रक के साथ बजते हुए हर किसी की जुबान पर चढ़ गया है। इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिले हैं। आज आप कई ऐसी पहल देख सकते हैं जिसमें खुद लोगों ने अपने क्षेत्र अथवा अपने समाज में इन समस्याओं के समाधान निकाले हैं।

प्रधानमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 6000 महिला सरपंचों के एक खास कार्यक्रम में 10 प्रेरणादायक औरतों को स्वच्छता चैंपियन के पुरस्कार से नवाज़ा। ऐसे ही कई प्रेरणादायक लोगों को जो स्वच्छता मिशन के लिए प्रतिबद्ध है उन्हें 'स्वच्छाग्रही' संबोधन दिया गया।

साफ़ तौर पर देखा जा सकता है कि सरकार अपनी ओर से गंभीर प्रयास कर रही है। चाहे वह किसी भी स्तर पर देखा जाए। तीन साल में यह काम काफी बेहतर स्थिति में है। ज़ाहिर है ये अभी पूरा नहीं हुआ है, यदि पिछली सरकारों ने इस मामले को ज़रा भी गंभीरता से लिया होता तो गंदगी आज इतनी गंभीर समस्या के रूप में सामने नहीं आती। बहरहाल, यह सरकार अपने गंभीर प्रयासों के लिए तारीफ की हकदार है। शायद यही वजह है की जनता इसकी तारीफ वोट के रूप में करती है। संशय तो इस बात में भी नहीं है कि जितने संघर्ष और प्रतिबद्धता से मोदी ने इस कार्य को आगे बढाया है ऐसा जोश आजतक किसी प्रधानमंत्री द्वारा देखने को नहीं मिला। स्वच्छता को लेकर सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास अभूतपूर्व हैं और इसके सकारात्मक परिणाम भी हम आसानी से देख पा रहे हैं। ❑

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

स्वच्छ होगा भारत तभी स्वस्थ होगा भारत

आशु दास

भारत की आजादी के 70 साल से ज्यादा का वक्त बीत चुका है, जिन लोगों ने देश को अंग्रेजों से आजाद कराने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया। क्या आज हम उन महान आत्माओं ने जिस स्वर्णिम भारत की परिकल्पना की थी उसे बना पाए हैं ? ऊंची इमारतों और भरी जेबों से बाहर निकलकर देखिए भारत की जो दशा और दिशा उन्होंने तय करनी चाही थी, वो आज भी अधूरी है। देश के विकास के साथ उन महापुरूषों ने एक और महत्वपूर्णकल्पना की थी स्वच्छ और स्वस्थ, निरोग भारत की। स्वच्छता के संदेश को 70 सालों में वो मुकाम हासिल नहीं हुआ, जिसके लिए वर्तमान सरकार भी जद्दोजहद करने में लगी हुई है। हालातों को सुधारने की दिशा में मंच पर भाषण देने की बजाय खुद पीएम मोदी ने हाथों में झाडू लेकर बापू के सपने को दोबारा से बुनने की कोशिश की।

स्वच्छता का संदेश देते हुए हाथों में झाडू सिर्फ एक शख्स ने नहीं उठाई बल्कि केंद्रीय मंत्रियों से लेकर आम जनता तक ने उठाई। सफाई को लेकर गंभीरता बरतनी शुरू कर दी और जगह–जगह सफ़ाई कार्यक्रमों में शामिल होकर स्वच्छता का संदेश दिया। घर-आंगन को छोड़ इस बार सड़कों, गली, मोहल्ले, नदी को साफ करने के लिए सब प्रेरित हो उठे। 2 अक्टूबर 2014 को शुरू हुए स्वच्छ भारत अभियान के 2017 में 3 वर्ष पूरे हो गए हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है ताकि, उनकी 150वीं जयंती पर उन्हें सिर्फ श्रद्धांजलि नहीं बल्कि स्वच्छ भारत के फूल अर्पित कर सकें। स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत के बाद सड़कों की सफ़ाई के लिए हाथों में झाडू थामना, सफाई पर ध्यान केंद्रित करना और स्वच्छ माहौल बनाने की कोशिश लोगों की आदत बन गई। लोग इस अभियान में शामिल हो रहे हैं और इस संदेश को फैलाने में मदद कर रहे हैं कि 'ईश्वर की भक्ति के बाद स्वच्छता सबसे बड़ी भक्ति है'।

सफाई हर घर,हर इंसान की मूल आवश्यकता है। सफाई से ना सिर्फ इंसान दिखने में आकर्षक लगता है बल्कि उसके शरीर को रोग छू भी नहीं पाते हैं। मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान चलाने के बाद देश के हर नागरिक के मन मस्तिष्क में एक बात स्पष्ट हो गई स्वच्छता की स्वस्थ रहने की कुंजी है। आपकी सड़के साफ होंगी, गली-मोहल्ले साफ रहेंगे तो बीमारियां नहीं पनपेंगी। इसे सिर्फ प्रशासन के सिर फोड़ने से नहीं बल्कि खुद जनता को उतरना होगा और जैसे अंग्रेजों के खिलाफ नागरिकों ने एक मुट्ठी की तरह काम किया था ठीक उसी तरह इस अभियान में भी काम करना होगा। क्योंकि स्वच्छ रहेगा भारत, तभी तो स्वस्थ और निरोग रहेगा भारत। ❑

(लेखिका पेशे से पत्रकार हैं। ये उनके निजी विचार हैं।)

लोगों में स्वच्छता की 'आदत' विकसित करना है मोदी सरकार का मुख्य लक्ष्य

अनुराग सिंह

भारत के सबसे साफ़ माने जाने वाले शहर अगर विदेशों के साफ़ माने जाने वाले शहरों से बहुत पीछे दिखाई पड़ते हैं तो उसके पीछे एक बड़ा कारण है उस गंदगी का जो जगह-जगह,यहाँ-वहाँ पड़ी मिलती है, को दिया गया हमारा न्योता व उसको हमारे समाज द्वारा दी गयी स्वीकृति। हम छोटे से बड़े हो गए, शिक्षित हुए, समाज में साक्षरता दर लगातार बढ़ती गयी और आज एक संतोषजनक स्तर पर है, परंतु समाज में साफ़-सफ़ाई की स्थिति बेहद चिंताजनक है। जब हम पढ़-लिख रहे थे, तो साफ़-सफ़ाई को एक अच्छे लक्षण व मूल्य के रूप में हमारे मस्तिष्क में आरोपित किया गया, परंतु एक आदत के रूप में इसका विकास ना कर पाना एक विफलता मानी जानी चाहिए।जिस दिन यह मूल्य एक आदत के रूप में तब्दील होगा, उस दिन इसके व्यावहारिक प्रभाव को हम अपने आस-पास,समाज में देख पाएँगे।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जो स्वच्छ परिवेश के पक्षधर थे, उनकी मृत्यु के 60 वर्ष बाद भी हमने लोगों व सरकारों में उनके स्वच्छता सम्बंधी मूल्यों को लेकर कोई विशेष रुचि नहीं देखी। परंतु, वर्तमान सरकार द्वारा इस विषय को गम्भीरता से लिया गया एवं एक अभियान के तहत इसे 2 अक्टूबर, 2014 को गांधी जयंती के अवसर पर शुरू किया गया। केंद्र सरकार द्वारा स्वच्छता को लेकर लगातार कई योजनाएँ शुरू की गयीं व उनका एक सकारात्मक परिणाम हमारे समक्ष उपस्थित है। युद्ध स्तर पर शुरू किए गए इस अभियान के तहत ग्रामीण क्षेत्रों के अंतर्गत लगभग 5 करोड़ शौचालयों का निर्माण किया गया। वहीं शहरी क्षेत्रों के अंतर्गत जहाँ शौचालयों की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों से बेहतर थी, वहाँ 38 लाख शौचालयों का निर्माण किया गया व 14 लाख शौचालय निर्माणाधीन हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ पहले शौचालयों की मौजूदगी 39 प्रतिशत थी, अब वह बढ़कर 69 प्रतिशत तक पहुँच गयी है जो इस अभियान की सफलता को धरातल पर स्थापित करता है। इस दौरान कुल 248000 गाँव, 203 जनपद व 5 राज्य (सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, केरल, उत्तराखंड व हरियाणा) पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हुए।

केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई ये योजनाएँ निश्चित रूप से बेहतर कार्य कर रहीं हैं, जिनका परिणाम सबके सामने उपस्थित है; परंतु केंद्र सरकार का प्रयास इससे कहीं ज़्यादा है। वह स्वच्छता को सिर्फ़ साफ़-सफ़ाई रखने के भौतिक उपादानों तक सीमित न करके लोगों में इसे एक आदत के रूप में विकसित भी करना चाहती है। सरकार का सबसे बड़ा उद्देश्य लोगों को साफ़-सफ़ाई के बारे में जागरूक कर उसे लोगों के जीवन में उतारने का है, जिसके लिए प्रधानमंत्री लगातार प्रयासरत हैं। सरकार द्वारा शौचालय का निर्माण करा के दे भर देने मात्र से कार्य समाप्त नहीं हो जाता, यह कार्य तब पूर्ण माना जाएगा जब लोग उसका उपयोग भी करें। इस अभियान की एक बड़ी विशेषता इसका विकेंद्रीकृत रूप है। अधिकतर योजनाएँ जो पूरे देश में एक साथ लागू होती हैं, उनमें शहरी क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाती है, परंतु स्वच्छ भारत अभियान में शहरों के साथ ही साथ गाँवों को उसी मात्रा में महत्व दिया गया अपितु वहाँ शौचालयों का अधिक निर्माण किया गया। यह योजना सिर्फ़ शहरों तक ही सीमित होकर नहीं रह गयी। इस अभियान को ग्रामीणों द्वारा अपनाया जाना एक सुखद संकेत है। बहुत सी महिलाएँ जो विवाह के बाद ससुराल गयीं व वहाँ शौचालय ना होने के कारण वापस अपने घर आ गयीं।

राँची के एक गाँव में खुले में शौच करने वाले पुरुषों की लुंगी को ग्रामीणों द्वारा ज़ब्त किया जाना, स्वच्छता को लेकर ग्रामीणों द्वारा एक सख्त क़दम माना जाना चाहिए और वास्तव में ये उदाहरण इस अभियान के ग्रामीण स्तर पर मज़बूत होने को ही दिखाते हैं, लोगों की आदत में सुधार व उनके जागरूक होने का नमूना पेश करते हैं।वास्तव में यह सरकार का ही नहीं हम सबका सम्मिलित अभियान है। इसमें हम अपना जितना योगदान दें, वह अपने समेत समाज व देश के लिए बेहतर कार्य करेगा। इस अभियान में शामिल हमारे सभी सफ़ाईकर्मी कर्मचारी जो इस अभियान की रीढ़ हैं,उन्हें सम्मान देना हमारा कर्तव्य होना चाहिए न कि उन्हें हेय दृष्टि से देखें। सेप्टिक टैंकों को साफ़ करते समय कई सफ़ाईकर्मियों की मृत्यु चिंताजनक है, सरकार को जल्द ही इसका उपाय तकनीक की सहायता से निकालना होगा ताकि सफ़ाई करते समय किसी के बहुमूल्य जीवन को संकट से बचाया जा सके।

2 अक्टूबर 2019 को महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के अवसर पर भारत अगर लोगों की आदतों में हुए बदलाव से स्वच्छता के संतोषजनक स्तर तक पहुँच सके तो यह देशवासियों द्वारा राष्ट्रपिता को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❑

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में शोधार्थी हैं। ये उनके निजी विचार हैं।)

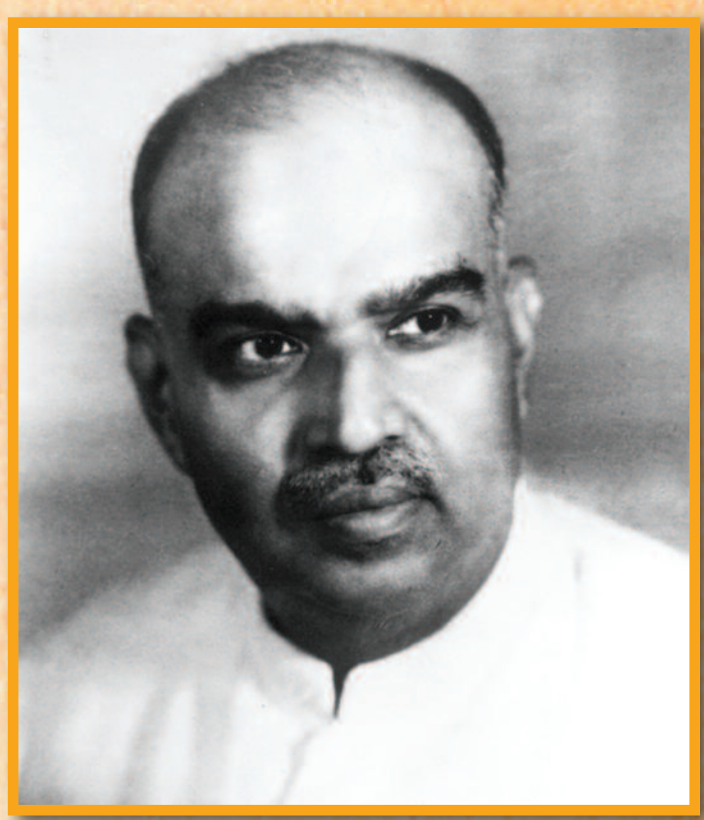

"The gigantic task of reconstruction, cultural, social, economic and political can be rendered possible thought coordinated efforts of bands of trained and disciplined efforts of bands of trained and disciplined Indians. Armed with the knowledge of Indian's past glory and greatness, her strength and weakness, it is they who can place before their country a progrmme of work, which while loyal to the fundamental traditions of India civilisation will be adapted to the changing conditions of the modern world."

- Dr. Syama Prasad Mookerjee

Convocation Address delivered at Gurukul Kangri Viswavidyalaya, Haridwar, 1943

Published By:
Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation
9, Ashoka Road, New Delhi- 110001
Web: spmrf.org, E-mail: office@spmrf.org, Phone: 011-23005850